



सार्वजनिक उपकरणों में वनिविश

संदर्भ:

केंद्र सरकार द्वारा देश के 23 सार्वजनिक क्षेत्र के उपकरणों (Public Sector Undertaking- PSU) में अपनी हस्तिसेदारी बेचने की तैयारी की जा रही है। गौरतलब है कि इन उपकरणों में वनिविश की अनुमति केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा पहले ही दी जा चुकी है। केंद्रीय वित्त मंत्री के अनुसार, सरकार ऐसे समय में सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों में हस्तिसेदारी बेचना चाहती है जब उसे इसका सही मूल्य प्राप्त हो। वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिये केंद्र सरकार ने 2.10 लाख करोड़ रुपये के वनिविश लक्ष्य निर्धारित किया है। इसमें से 1.20 लाख करोड़ रुपये सार्वजनिक क्षेत्र के उपकरणों में वनिविश से और अतिरिक्त 90,000 करोड़ रुपये वित्तीय संस्थानों में सरकार की हस्तिसेदारी की बिक्री से प्राप्त होने का अनुमान है।

प्रमुख बंदी:

- देश की स्वतंत्रता के पश्चात प्रमुख रणनीतिक क्षेत्रों में सार्वजनिक क्षेत्र के उपकरणों की स्थापना बहुत ही आवश्यक थी।
- सार्वजनिक क्षेत्र की स्थापना का उद्देश्य प्रमुख रणनीतिक क्षेत्रों में स्थानीय क्षमता का विकास कर अन्य देशों पर भारत की निर्भरता को कम करने के साथ ही क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना और रोजगार अवसरों का सृजन करना था।
- 1950 के दशक के बाद से भारतीय आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवेश में बहुत से बड़े बदलाव हुए हैं।
- वर्तमान में क्षेत्रीय विकास और रोजगार के सृजन का कार्य सीधे संबंधित राज्य सरकारों द्वारा या केंद्र सरकार द्वारा किया जाता है, ऐसे में इन क्षेत्रों में PSU के उद्देश्य सीमित हुए हैं।
- कई विशेषज्ञों के अनुसार, यद्यपि समय पर पीछे रह रही PSUs में वनिविश नहीं किया जाता है तो यह समस्या और अधिक गंभीर हो सकती है।
- हाल में भारतीय अर्थव्यवस्था लगातार गरिबत देखी जा रही है ऐसे में अर्थव्यवस्था को पुनः गति प्रदान करने के लिये नजीकरण बहुत ही आवश्यक हो गया है।
- गौरतलब है कि वित्तीय वर्ष 2019-20 के बजट में भी केंद्रीय वित्तमंत्री ने गैर-वित्तीय सार्वजनिक कंपनियों में अपनी हस्तिसेदारी को 51% से कम करने की बात कही थी।

वनिविश (Disinvestment):

- सरकारी कंपनियों में वनिविश से आशय सरकार द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के किसी उपकरण में अपनी हस्तिसेदारी की बिक्री से है।
- सरकार राजकोषीय बोझ को कम करने या वशिष्ट ज़रूरतों को पूरा करने के लिये धन जुटाने हेतु वनिविश का विकल्प अपनाती है।
- कुछ मामलों में, सरकारी संपत्ति के नजीकरण के लिये वनिविश किया जा सकता है। हालांकि, सभी वनिविश नजीकरण नहीं है।

नजीकरण (Privatisation):

- सार्वजनिक क्षेत्र के उपकरण के नजीकरण के तहत सरकार उस उपकरण से अपनी पूरी या अधिकांश हस्तिसेदारी किसी नजी कंपनी को बेच देती है।
- नजीकरण के पश्चात संबंधित संगठन/उपकरण का स्वामित्व और नियंत्रण सरकार के पास नहीं रहता है।

उद्देश्य:

- राजकोषीय बोझ को कम करना।
- सार्वजनिक वित्त में सुधार।
- नजी स्वामित्व को प्रोत्साहित करना।

- विकास कार्यक्रमों हेतु वित्त का प्रबंध करना ।
- बाजार में प्रतस्पर्धा को बढ़ावा देना ।

नविश और सार्वजनिक संपत्तिप्रबंधन विभाग (Department of Investment and Public Asset Management- DIPAM):

- सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में केंद्र सरकार के नविश संबंधी कार्यों के प्रबंधन हेतु 10 दिसंबर, 1999 को केंद्रीय वित्त मंत्रालय के तहत नविश विभाग की स्थापना की गई थी ।
- 14 अप्रैल, 2016 को नविश विभाग का नाम बदलकर 'नविश और सार्वजनिक संपत्तिप्रबंधन विभाग' (Department of Investment and Public Asset Management- DIPAM) कर दिया गया था ।

नविश का कारण:

प्रतस्पर्धा:

- वर्तमान में अधिकांश PSUs ऐसे क्षेत्रों में सक्रिय हैं, जहाँ नज्जी क्षेत्र की कंपनियाँ कम लागत में बेहतर कार्य कर रही हैं और PSUs नज्जी क्षेत्र की प्रतस्पर्धा में पीछे रह गई हैं ।

नवीनीकरण का आभाव:

- अधिकांश PSUs में समय के साथ तकनीक के नवीनीकरण के अभाव में इनका संचालन कभी खर्चीला हो गया है ।
- सार्वजनिक क्षेत्र की कई अन्य कंपनियों के घाटे के कारण उनमें भूमि के अतिरिक्त बहुत ही कम संपत्ति बची है ।
- सरकार द्वारा भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (BPCL) को भी नविश के लिये चनिहति किया गया है, आर्थिक दृष्टिकोण से BPCL इस सूची की सबसे महत्त्वपूर्ण कंपनियों में से एक है ।
- सरकार द्वारा इस समय BPCL में नविश का नरिणय बहुत ही तार्किक होगा क्योंकि वर्तमान में इसी क्षेत्र में एक अन्य PSU 'इंडियन ऑयल' भी सक्रिय है, जो कि BPCL की तुलना में काफी बड़ी है ।
- साथ ही 'हदिसतान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड' (HPCL) का प्रबंधन 'ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड' (ONGC) को दे दिया गया है ।
- वर्तमान में BPCL की आर्थिक स्थिति बहुत ही अच्छी है परंतु देश में खनजि तेल के क्षेत्र में स्थानीय और वदिशी नज्जी कंपनियों की बढ़ती सक्रियता के कारण भविष्य में BPCL के शेयरों में गरिवाट आ सकती है ।

भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (BPCL):

- सरकार द्वारा भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (BPCL) को भी नविश के लिये चनिहति किया गया है, आर्थिक दृष्टिकोण से BPCL इस सूची की सबसे महत्त्वपूर्ण कंपनियों में से एक है ।
- सरकार द्वारा इस समय BPCL में नविश का नरिणय बहुत ही तार्किक होगा क्योंकि वर्तमान में इसी क्षेत्र में एक अन्य PSU 'इंडियन ऑयल' भी सक्रिय है, जो कि BPCL की तुलना में काफी बड़ी है ।
- साथ ही 'हदिसतान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड' (HPCL) का प्रबंधन 'ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड' (ONGC) को दे दिया गया है ।
- वर्तमान में BPCL की आर्थिक स्थिति बहुत ही अच्छी है परंतु देश में खनजि तेल के क्षेत्र में स्थानीय और वदिशी नज्जी कंपनियों की बढ़ती सक्रियता के कारण भविष्य में BPCL के शेयरों में गरिवाट आ सकती है ।

वदिशी नविश की संभावनाएँ और नज्जीकरण :

- वर्ष 2008 की आर्थिक मंदी के बाद वैश्विक अर्थव्यवस्था में कई बड़े बदलाव हुए हैं ।
- वशिषकर हाल में अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध और COVID-19 की अनश्चितता के बाद वैश्विक स्तर पर नविशक ऐसे सहयोगियों के साथ नविश के लिये इच्छुक है जहाँ प्रगतकी संभावना बेहतर हो ।
- गौरतलब है कि देश की स्वतंत्रता के पश्चात 1950 और 1960 के दशक के दौरान भारतीय औद्योगिक क्षेत्र के अधिकांश भाग पर PSUs का एकाधिकार रहा ।
- 1990 के दशक के 'उदारीकरण, नज्जीकरण तथा वैश्वीकरण' (Liberalization, Privatization, and Globalization- LPG) मॉडल के तहत देश की अर्थव्यवस्था में उदारीकरण को बढ़ावा दिया गया और 2000 के दशक में भी देश में अर्थव्यवस्था के वशिषीकरण पर वशिष ध्यान दिया गया ।
- इस दौरान देश के व्यापार और जीडीपी अनुपात में वृद्धि देखी गई और पछिले कुछ वर्षों में वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत नविश का एक बड़ा बाज़ार बन कर उभरा है ।

लाभ:

- वनिविश PSU स्वामित्व का एक बड़े हिस्से को खुले बाज़ार के लिये उपलब्ध करता है, जो देश में एक मज़बूत पूँजी बाज़ार की स्थापना का अवसर प्रदान करता है।
- PSUs में वनिविश के माध्यम से सरकार को देश की अर्थव्यवस्था पर पड़े COVID-19 के नकारात्मक प्रभावों से उबरने और राजकोषीय घाटे को कम करने में सहायता प्राप्त होगी।

चुनौतियाँ:

- सरकार द्वारा वनिविश के लिये सूचीबद्ध 23 PSUs में केवल 4 या 5 PSUs के लिये अच्छे ग्राहक और उपयुक्त मूल्य प्राप्त होने का अनुमान है।
- **COVID और वनिविश:** COVID-19 महामारी के कारण देश में औद्योगिक और अन्य क्षेत्रों में हुई आर्थिक गिरावट के कारण सरकार के लिये PSUs के वनिविश से 2.10 लाख करोड़ रुपये का लक्ष्य प्राप्त करना आसान नहीं होगा।
- COVID-19 के कारण वनिविश की प्रक्रिया को भी समय से शुरू नहीं किया जा सका है, ऐसे में मार्च 2021 तक सभी चिह्नित PSUs में वनिविश की प्रक्रिया को पूरा करना एक बड़ी चुनौती होगी।
- एक अनुमान के अनुसार, अन्य देशों की तुलना भारत में 'व्यापार करने की लागत' (Cost of Doing Business) अर्थात व्यापार में शुरू करने या जारी रखने में भूमि, रसद, ऊर्जा आदि की लागत बहुत अधिक है।
- देश में नज़ी क्षेत्र के उद्यमों के व्यवसाय में आई गिरावट के कारण PSUs में हिससेदारी खरीदने में विदेशी कंपनियों से कड़ी प्रतिस्पर्धा देखने को मलि सकती है।

अन्य चुनौतियाँ:

- साथ ही सरकार को वनिविश के लिये चिह्नित PSUs में कार्य कर रहे कर्मचारियों के रोज़गार सुरक्षा पर भी ध्यान देना होगा।
- वर्तमान में सरकार द्वारा **रणनीतिक वनिविश** (Strategic Disinvestment) हेतु सूचीबद्ध कंपनियों काफ़ी बड़ी हैं और वनिविश के बाद भी भारतीय बाज़ार में इनका महत्त्व बना रहेगा, ऐसे में बोलीदाता संस्थाओं को इन कंपनियों के संचालन के संदर्भ में अपनी योग्यता सिद्ध करने होगी।

समाधान:

- वनिविश के लिये निर्धारित PSUs की सूची में 'एयर इंडिया' को भी शामिल किया गया है, हालाँकि 'एयर इंडिया' जैसी बड़ी कंपनी का एक ही बार में वनिविश बहुत ही कठिन होगा ऐसे में इसके कुछ हिस्सों को अलग से वनिविश के लिये चुना जा सकता है।
- सरकार को वनिविश के साथ देश में नज़ी क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिये व्यवसाय करने की लागत में कमी लाने पर विशेष ध्यान देते हुए व्यवसाय अनुकूल नीतियों का निर्माण करना चाहिये।
- साथ ही औद्योगिक क्षेत्र के सभी हितधारकों के सहयोग से नज़ी क्षेत्र की ज़रूरतों और सरकार की नीतियों के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया जाना चाहिये।

आगे की राह:

- वर्तमान में सार्वजनिक क्षेत्र की कुछ कंपनियों सरकार पर एक अनावश्यक भार बन कर रह गई हैं। अतः ऐसी कंपनियों में वनिविश बहुत ही आवश्यक हो गया है।
- सरकार को PSUs में वनिविश के अपेक्षित धन प्राप्त करने हेतु अधिक-से-अधिक बोलीदाताओं को आकर्षित करने के लिये एक व्यापक नीतिका निर्माण करना चाहिये।
- सरकार को बजट के लिये आवश्यक धन के दबाव में न रहकर वनिविश की प्रक्रिया को नष्टिपक्ष और पारदर्शी बनाने पर विशेष ध्यान देना चाहिये, हालाँकि इस प्रक्रिया में निर्धारित अवधि से अधिक समय लग सकता है।

अभ्यास प्रश्न: वनिविश से आप क्या समझाते हैं? देश में आर्थिक क्षेत्र में आई गिरावट को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम में वनिविश के निर्णय की समीक्षा कीजिये।